

धर्मी वहाँ मेरा हंस रहवाया,

दोहा कहे सन्त सगराम,
राम ने भूलू कीकर,
भूलियो भुंडी होय,
माजनो जासी भीखर ।
भीखर जासी माजनो,
देवे गधे री जूण,
मोरो पड़सी टाकिया,
ऊपर लद सी लूण ।
ऊपर लद सी लूण,
चढ़ावे सामी शिखर,
कहे सन्त सग राम,
राम ने भूलू कीकर ।

धर्मी वहाँ मेरा हंस रहवाया,
वहाँ नहीं चंद भाण कोनी रजनी,
नहीं रे धूप नहीं छाया ॥

पग बिना पंथ मग बिना मार्ग,
पर बिना हँस उड़ाया,
चालत खोज मंडे नहीं उनका,
बेगम जाय समाया,
धर्मी वहाँ मेरा हँस रहवाया ॥

झल बिना पाल पाल बिन सरवर,
बिना रैणी रहवाया,
बिना चोच हंसा चूण चुगे वो,
सीप बिना मोती पाया,
धर्मी वहाँ मेरा हँस रहवाया ॥

हैं वो अथाग थाग नहीं उणरे,
चर अचर माही थाया,
जल थल वेद वो प्रगट करके,
गुरु मिल्या गम पाया,
धर्मी वहाँ मेरा हँस रहवाया ॥

किसको केऊ कुण म्हारी माने,
सतगुरु मोय लखाया,
भूल्योड़ा जीव भटक मर जावे,
दास कबीर फरमाया,
धर्मी वहाँ मेरा हँस रहवाया ॥

धर्मी वहाँ मेरा हँस रहवाया,
वहाँ नहीं चंद भाण कोनी रजनी,
नहीं रे धूप नहीं छाया ॥

प्रेषक रामेश्वर लाल पँवार ।
आकाशवाणी सिंगर ।
9785126052



Bharat Temples

Complete Bhajans Collections - Download Free Android App

<https://play.google.com/store/apps/details?id=com.numetive.bhajans>

Facebook: <https://www.facebook.com/bharattemples/>

Telegram: <https://t.me/bharattemples>

Youtube: <https://www.youtube.com/channel/UC24oJCxZjyhhKzSUD-Lt9Tw>